



पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ६० • अंक २४ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • दिसम्बर (द्वितीय) २०१८

क्योंकर बहाव रोकिये
पच्छम की बाढ़ का।
गंगा की रौ में बैठके
दिखला दिया कि यूँ॥

-पं. चमूपति



स्वामी श्रद्धानन्द

जन्म

फाल्गुन कृष्ण १३, सं. १९१३ वि.
(२२ फरवरी १८५७ ई.)

मृत्यु

२३ दिसम्बर १९२६ ई.

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।

अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥ अथर्व १९.१५.५

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥ अथर्व १९.१५.६

अथर्ववेद के इन दो प्रसिद्ध मन्त्रों में परमपिता परमेश्वर ने हमें अभय रहने का मार्ग सुझाया है। ये मन्त्र कह रहे हैं कि हम भयमुक्त हो जाएँ। किसी भी अवस्था में हमें कोई भय न लगे। तीनों लोकों (पृथिवी, अन्य ग्रह नक्षत्र आदि व उनके बीच का स्थान) में और तीनों लोकों से हमें कोई भय न हो। किसी दिशा से भी हमें कोई भय न हो। जो मित्र हैं और जो अभी मित्र नहीं हैं, उनसे भी कोई भय न हो। हमें जो ज्ञात है और जो अभी प्रत्यक्ष नहीं है, उससे भी कोई भय न हो। अन्धकार अथवा उजाले की अवस्था में भी कोई भय न हो। ध्यान देने योग्य बात है, इस मन्त्र में मित्र और अमित्र का प्रयोग। मित्र से भय उस स्थिति में हो सकता है जब वह आपका कोई ऐसा रहस्य जानता हो जिसके उजागर होने पर आपको हानि हो या लज्जा का सामना करना पड़े। इस मन्त्र में मित्र का विपरीत कोई शत्रुसूचक शब्द नहीं है, मात्र अमित्र ही कह दिया गया है। अर्थात् इस जगत् में किसी को भी शत्रु की दृष्टि से न देखें। हर कोई या तो मित्र है अथवा मित्र बनना शेष है।

भावार्थ में ये मन्त्र कह रहे हैं कि हम इतने निडर हो जाएँ कि कोई भी कर्म करते हुये हमें भय का आभास भी न हो। वाणी से निडर होकर बोलें। मुख से निःसंकोच भोजन ग्रहण करें। नासिका से स्वच्छन्द श्वास लें। आँखों से बिना भय के देखें। कानों से बिना भय के सुनें। हाथों से बिना भय के कर्म करें और पैरों से बिना भय के गन्तव्य पर जाएँ।

परन्तु इतना भयमुक्त कोई होगा कैसे? इसकी कुंजी या कहें तो संसार में सारे सुखों की कुंजी इन्हीं मन्त्रों में ही है। मन्त्रों के अन्त में लिखा है “सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु”, जीवन की सब दिशाएँ, सब पहलू मेरे मित्र हो जाएँ। सब मित्र हों तो फिर भय कैसा! परन्तु सब मित्र बनेंगे कैसे? मित्रता तो सदा दोतरफा होती है। सबसे मित्रता की अपेक्षा करने से पहले मुझे स्वयं उनसे मित्रवत् व्यवहार करना पड़ेगा। मित्रता का पहला नियम है कि मित्र मित्र को हानि नहीं पहुँचाता, सदैव मित्र के लाभ की ही सोचता है। जब मैं स्वार्थ भाव से उपर उठ, सबको अपना मित्र मान, अपने सभी कर्म सर्वहितकारी यज्ञ की भावना से करूँगा तो मेरा अन्तःकरण मुझे कर्म करने से नहीं रोकेगा और मैं भयमुक्त हो जाऊँगा।

न्यू जर्सी, अमेरिका

परमेश्वर सगुण व निर्गुण है

परमेश्वर सगुण व निर्गुण दोनों प्रकार है। जो गुणों से सहित वह सगुण और जो गुणों से रहित वह निर्गुण कहाता है। अपने-अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण है, कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है जिसमें केवल निर्गुणता व केवल सगुणता हो। किन्तु एक ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान, बलादि गुणों से सहित होने से सगुण और रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि जीव के गुणों से पृथक् होने से निर्गुण कहाता है।

(स.प्र.स.७)